डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
मोबाइल नंबर- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 2 दिनांक - 16-07-2020

विषय- रत्नावली नाटिका

द्वीपादन्यस्मादपि मध्यादपि जलनिर्धेदिशोऽप्यन्तात्।

आनीय झटिति घटयति विधिरभिमतमभिमुखीभूतः।।

श्लोकानुवाद - अनुकूल भाग्य दूसरे द्वीप से जलानिधि के बीच से तथा दिशाओं के अंतिम छोर से भी इष्ट वस्तु को शीघ्र लाकर मिला देता है।।

व्याख्या- "भाग्यं फलति सर्वत्र" को चरितार्थ करने के लिए सूत्रधार कह रहा है कि भाग्य की लीला विचित्र होती है। जिस अभिलषित वस्तु की प्राप्ति की आशा व्यक्ति को नहीं रहती है। उसे भी भाग्य अगम्य स्थानों से लाकर प्रदान कर देता है। इसलिए तुम्हें यह चिंता नहीं करनी चाहिए कि तुम्हारी पुत्री का वर दूरदेशीय है। अनुकूल भाग्य की लीला अपरंपार है।

प्रारम्भेऽस्मिन्स्वामिनो वृद्धिहेतौ दैवेनेत्थ दत्तहस्तावलम्बे।

सिद्धर्भ्रान्तिर्नास्ति सत्यं तथापि स्वेच्छाचारी भीत एवास्मि भर्तुः।।

श्लोकानुवाद- स्वामी (राजा उदयन) के (चक्रवर्तित्वप्राप्ति रूप) अभ्युदय के कारणभूत इस कार्य में भाग्य के द्वारा इस प्रकार हाथ का अवलंबन दिए जाने पर सफलता में सन्देह नहीं है। यह सत्य है तथापि अपनी इच्छा से (मनमाना) कार्य करने वाला मैं स्वामी से भयभीत हो रहा हूं।

व्याख्या - यौगन्धरायण कह रहा है कि सिद्ध महात्मा के वचन का विश्वास कर उदयन को चक्रवर्ती सम्राट बनाने के लिए मैंने योजना प्रारंभ कर दी है अर्थात सिंहलेश्वर से रत्नावली को मांग कर देवी वासवदत्ता के हाथ में उसे समर्पित कर दिया है। इस कार्य से निश्चय हो राजा उदयन रत्नावली पर मुग्ध हो जायेंगे। भाग्य ने भी सहायता की है। रत्नावली की रक्षा भाग्य ने ही की है। वणिकों के द्वारा पहचान कर यहां तक रत्नावली के आने में भाग्य ने ही सहायता की है। इसलिए राजा उदयन रत्नावली से विवाह कर सार्वभौम- सत्ता को प्राप्त करेंगे। इसमें किसी प्रकार की भ्रांति नहीं है। फिर भी मेरी स्वेच्छाचारिता ही मेरे भय का कारण है। मैंने रत्नावली की याचना के लिए उदयन से पूछा तक नहीं। यदि सिंहलेश्वर अपनी पुत्री को न देते और उदयन इस तथ्य को जान जाते तो मैं उनकी दृष्टि में गिर जाता क्योंकि याचना करने पर रत्नावली न मिलने पर उदयन की अप्रतिष्ठा होती।

विश्रान्तविग्रहकथो रतिमांजनस्य चित्ते वसन्प्रियवसन्त एव साक्षात्।

पर्युत्यको निजमहोत्सवदर्शनाय वत्सेश्वर: कुसुमचाप इवाभ्युपैति॥

श्लोकानुवाद- जिनके युद्ध (कामपक्ष में शरीर) की कथा समाप्त हो चुकी है जो अनुरागी (पक्षांतर में अपनी प्रिया रति से युक्त) हैं, जो प्रत्येक जन के हृदय में निवास करते हैं, जिन्हें वसंतक (नामक विदूषक मदनपक्ष में वसंत ऋतु) प्रिय है, जिनके हाथ में कुसुम का धनुष है तथा जो अपना महोत्सव देखने के लिए उत्सुक हैं ऐसे वत्सराज उदयन साक्षात् कामदेव के सामान आ रहे हैं।।

व्याख्या- यौगन्धरायण राजा उदयन की प्रशंसा करते हुए कह रहा है कि वत्सराज साक्षात् कामदेव के समान प्रतीत हो रहे हैं। राजा उदयन के पराक्रम के विग्रह (युद्ध) की कथा समाप्त हो गई है। इन्होंने संपूर्ण शत्रुओं का विनाश कर दिया है, इसलिए विग्रह (शरीर) रहित प्रतीत हो रहे हैं। यह रति-इंद्रिय के विषयों- से अनुराग करने वाले हैं अर्थात रूप, रस, गंध, स्पर्श आदि अर्थों के प्रति इनकी आसक्ति उसी प्रकार रहती है जैसे कामदेव की अपनी प्रिया रति के प्रति। जिस प्रकार कामदेव का प्रिय मित्र वसंत उसे उद्दीप्त करता है उसी प्रकार राजा उदयन का प्रिय मित्र वसंतक इन्हें आनंद प्रदान करता रहता है। जिस प्रकार कामदेव वत्स (पुत्र) का ईश्वर (नियंता) है अर्थात् बिना काम के पुत्र उत्पत्ति नहीं हो सकती है उसी प्रकार राजा उदयन वत्स देश के शासक हैं। ये मनोभाव कामदेव के समान प्रत्येक प्रजाजन के हृदय में निवास करने वाले हैं अर्थात् इनके गुणों एवं वात्सल्य के कारण इन्हें प्राणों से भी अधिक प्रिय समझती है। कामदेव का धनुष फूलों का है राजा उदयन ने भी कुसुम का धनुष धारण कर लिया है। कहने का आशय यह कि राज्य के शत्रुओं का नाश हो जाने के कारण इन्हें धनुष धारण करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती अथवा कामदेव के समान अपने सौंदर्य से सबको आहत करने वाले हैं। तभी तो राजा उदयन को देखकर सागरिका को भ्रम हो गया है। वह राजा उदयन को साक्षात कामदेव समझने लगी। इस प्रकार के अद्वितीय गुण वाले राजा उदयन साक्षात कामदेव के तुल्य है जो अपना ही महोत्सव अर्थात काम महोत्सव देखने के लिए उत्कंठापूर्वक आ रहे हैं। प्रजा मदन-महोत्सव मना रही है और राजा साक्षात मदन ही हैं अथवा उन्हीं के द्वारा मदन महोत्सव का आयोजन किया गया है अथवा उनके सम्मान में उत्सव मनाया जा रहा है अथवा प्रजा उनकी आत्मा के समान है। इसलिए प्रजा का उत्सव उदयन का उत्सव है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वह मानो अपनी महोत्सव देखने के लिए लालायित हो कर आ रहे हैं।